# पहचानें मन की अद्भुत शक्ति को

आपको पता है, हमारे इस चमड़े के शरीर के अंदर भी एक व्यक्ति ही बैठा है समझ लो। जो जीने की सम्पूर्ण इच्छा रखता है। वो दिखाई नहीं दे रहा है बिल्कुल भी, लेकिन जीना तो वह चाहता है। हर पल, हर क्षण वह खुद को सभी के सामने लाना चाहता है। वह सारे बंधनों को तोड़ने के लिए लड़ रहा है। तभी तो हमें समझ में एक बात नहीं आती कि क्यों एक पुत्र या पुत्री कोई भी समाज से विद्रोह कर बैठता है या अपने पिता से विद्रोह कर बैठता है। ऐसा रोज़ वह जताता है सभी से, क्योंकि वह खुश होना चाहता है, सुखी होना चाहता है, शांत रहना चाहता है। इसके लिए ऐसा कि सबसे ऊंची चोटी पर चढ़कर वह खुद को जताना चाहता है कि मैं जीत गया, मैंने सफलता अर्जित कर ली। समुद्र की गहराई का पता लगाना चाहता है वो!

उसे भय है, डर लग रहा है, रहने का, जीने का, खाने का, पीने का, कैसे होगा, क्या होगा? वह है हमारा मन। आप सोचिए ज़रा शरीर मात्र एक रिफ्लेक्शन है। वो चाहता है कि इस जीवित शरीर से सबकुछ प्राप्त कर ले, लेकिन यह असंभव है क्योंकि शरीर की सीमाएं उस व्यक्ति को काम करने के लिए या सोचने के लिए बाध्य करती है। हम सभी शरीर से थोड़ा भी अलग हो जाएं तो हम अमरत्व को प्राप्त कर लेंगे। जिसके लिए हम विद्रोही बन रहे हैं। थोड़ा सा खड़े होकर सिर्फ सोचें, क्या है वह, वह भी शांति ही तो है, सफलता है, मान है, नाम है, वह भी सुख के लिए। आप देखो, चाहे

**कौनहैं हम, क्या है हमारा उद्देश्य, क्यों हमारी दुनिया इसी उलझन को सुलझाने में लगी है? हम हमारे बंधन बनाते भी खुद हैं तथा मिटाने का प्रयास भी खुद ही करते हैं। जब कोई बंधन बनता है तो हम ये नहीं कहते कि क्यों बन रहा है, जब वह बन जाता है तो कहा करते हैं, हम फंस गए हैं! 'ये हम मनुष्य हैं' जो कर भी रहा है, पा भी रहा है?**

वह कम है या ज़्यादा है, वह तो सिर्फ और सिर्फ सुख या शांति के लिए! उदाहरण, हर दिन कुआं, हर दिन पानी, ऐसी हमारी आदत है। इसी के लिए इतना कुछ करते हैं। आप पा भी तो रहे हैं ना! इससे मिलता है। फिर कल दुबारा पाने में जुट जाते हैं। है ना! वैसे आपको भी पता है कि सबकुछ अस्थिर है, बदल रहा है, चेंज हो रहा है। वास्तव में जो नहीं है, उसे सच मान लेना यही तो बंधन है। जिसका अस्तित्व वर्तमान में सिर्फ सच दिखाई देता, वह सब मिथ्या है। आप सोचो शरीर भी तो सच दिखाई देता है वर्तमान में, लेकिन नहीं है।

यह बंधन ही तो हुआ। तो यह हुआ कि वास्तव में झूठ वह है, जो वर्तमान में सच है। इस परिवर्तनीय संसार में भी परिवर्तनीय लोग हैं, लोग उसे ही सच मान लेते हैं, जो हो रहा है। आशा व डर के कारण झूठ बोल रहे हैं। ठीक हो की आशा, बदनामी का डर, मिथ्या अंहकार ही है। जब जो मिला संसार में रहने को विवश करता है। सभी इस नाटक को समझ पा रहे हैं क्या वास्तव में! लेना, खसोटना, लूटना, सबकुछ किसके लिए है, मात्र थोड़ी सी संतुष्टि के लिए ही ना! हमारा जीवन कैसा है सोचो, बस भाग रहा है। जी नहीं रहा है। इतनी सारी चीज़ें मिलने के बाद जीना, कोई जीना नहीं है। बल्कि आपके पास कुछ भी ना हो, फिर भी आप खुश हैं, इसका मतलब आप जी रहे हैं। यही परमात्मा हमें सिखा रहे हैं। मन की शक्ति खुद को समझने में लगाने की आवश्यकता है, ना कि दूसरों को समझने में या चीज़ों को इकट्ठा करने में। मन की शक्ति इस नाटक को समझने में लगाओ। आप इसमें एक कलाकार की भांति अपनी कला का प्रदर्शन एक उदाहरण बनकर करो, बस यही जीवन है।

**सुन्नी-शिमला।** सेवाकेन्द्र के प्रथम वार्षिकोत्सव में दीप प्रज्वलित करने के पश्चात् उपस्थित हैं ग्रामीण एवं पंचायती राज्यमंत्री वीरेन्द्र कंवर, पूर्व सांसद सुरेश चंदेल, विधायक हीरालाल, ब्र.कु. शकुंतला, मीना कंवर तथा ब्र.कु. प्रकाश,माउण्ट आबू।

**हाथरस-वसुन्धरा एन्कलेव।** नवरात्रि के अवसर पर चैतन्य देवियों की झाँकी एवं चरित्र निर्माण प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के पश्चात् नगरपालिका अध्यक्ष आशीष शर्मा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. रानी।

**सीतापुर-सिधौली।** नये उपसेवाकेन्द्र के उद्घाटन कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए विधायक डॉ. हरगोविंद भार्गव, आर.पी. सिंह, डी.जी.एम.,परचेज़ बजाज हिन्दुस्तान लि.,लखनऊ, ब्र.कु. योगेश्वरी, पी.एन. गुप्ता,उद्योगपति, ब्र.कु. बॉबी,माउण्ट आबू तथा अन्य।

**पानीपत-हरियाणा।** शिक्षाविदों के लिए आयोजित 'इम्पोर्टेन्स ऑफ मोरल एजुकेशन इन इस्टैबलिशिंग वैल्यु बेस्ड सोसायटी' विषयक कॉन्फ्रेन्स के दौरान सुमेधा कटारिया,आई.ए.एस.,डेप्युटी कमिश्नर,पानीपत को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. भारत भूषण तथा ब्र.कु. सरला दीदी।

**भुवनेश्वर-बी.जे.बी. नगर(ओडिशा)।** 'इनर ब्यूटी की टू आउटर सक्सेस' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. मंजू,माउंट आबू। मंचासीन हैं ब्र.कु. तपस्विनी, नीलाशैला महाविद्यालय के प्रिंसीपल प्रो. दास,राउरकेला तथा लोकल न्यूज़पेपर के एडिटर नृसिंह चरण साहू।

**पिलानी-राज.।** नवरात्रि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में नवरात्रि का आध्यात्मिक रहस्य बताते हुए ब्रह्माकुमारी बहन।

**महेन्द्रगढ़-हरियाणा।** 'आपदा प्रबंधन एवं स्वच्छता अभियान' के सेंट्रल यूनिवर्सिटी, महेन्द्रगढ़ पहुंचने पर वाइस चांसलर वी.सी. कोहाड़ एवं उनकी टीम के सदस्यों द्वारा स्वागत करने के उपरांत समूह चित्र में ब्र.कु. भारतभूषण, ब्र.कु. सोनिया, ब्र.कु. कमल बहन तथा अभियान के अन्य सदस्य।



**नोएडा-से.26।** 'आपदा प्रबंधन एवं स्वच्छता अभियान' के कार्यक्रम में मंचासीन हैं स्टेट वुमेन कमिशन की प्रेसीडेंट विमला बाथम, ब्र.कु. ज्योति, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुदेश, कार्यक्रम निदेशिका रुपाली कपूर, ब्र.कु. भारत भूषण, ए.डी.एम. दिवाकर सिंह, आपदा प्रबंधन कार्यक्रम विशेषज्ञा शिखा शर्मा तथा अन्य।

**आगरा-ट्रान्स यमुना कॉलोनी।** आध्यात्मिक कार्यक्रम के दौरान अपने विचार व्यक्त करते हुए विधायक जगन प्रसाद गर्ग। साथ हैं ब्र.कु. सत्या बहन, ब्र.कु. राज बहन तथा अन्य।



**दिल्ली-लाजपत नगर।** नवरात्रि महोत्सव में चैतन्य देवियों की झाँकी के उद्घाटन पश्चात् चित्र में निगम पार्षद सुभाष मल्होत्रा, ब्र.कु. चंद्र, ब्र.कु. जया तथा अन्य।

## ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-4(2018-2019)

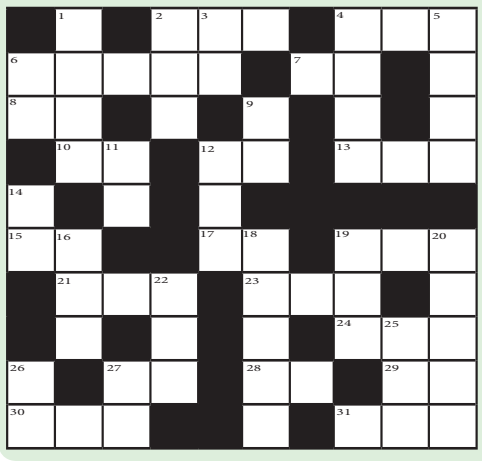



### ऊपर से नीचे

1. विश्व की सर्व आत्मायें आप श्रेष्ठ आत्माओं का...है, कुनबा (4)
2. भल...मांजते रहो व कपड़ा साफ करते रहो तुम्हारे सामने कोई आये झट बाबा याद आये (3)
3. जीवन, प्राण, समझ, जानकारी (2)
4. वरदान, दुआ , कृपा (4)
5. महाविनाश, अंतकाल (4)
6. पांव, पग (2)
9. आठ, संख्यावाचक एक शब्द (2)
11. दुराचारी, खराब (2)
12. माया...पर जीत अवश्य पानी है, शत्रु (3)
14. स्वाद, जलीय अंश (2)
16. खदान, भंडार (3)
18. सावधान, सचेत (5)
19. खत्म, नष्ट (3)
20. अभागा, दुर्भाग्यशाली (5)
22. सच्चे ब्राह्मण वह हैं जिनकी सूरत और...से प्यूरिटी की रॉयल्टी का अनुभव हो (3)
25. कुल, खान-दान, वंश (3)
26. मुर्दा, मृत शरीर (2)
27. सारा, सम्पूर्ण (2)

### बायें से दायें

2. ड्रामानुसार हरेक आत्मा को अपना-अपना पार्ट...है (3)
4. ...बन माशूक शिवबाबा को याद करना है, प्रेमी (3)
6. चलो चलें...पथ पर कदम से कदम मिला के, बदलाव (5)
7. ...जैसी खुराक नहीं (2)
8. औषधि, कलियुगी फ्रूट्स (2)
10. खुदा, ईश्वर (2)
12. दुराचारी, कुप्रवृत्ति वाले (2)
13. दिल की...में कलम डुबोकर बाबा तुझे एक खत (3)
15. दोस्त, मित्र (2)
17. नाखून, डोर (2)
19. व्यर्थ, बेकार (3)
21. शिवबाबा परमधाम...है, रहने वाला (3)
23. ...नहीं लो बदलकर दिखाओ, प्रतिशोध (3)
24. घना, गझिन (3)
27. सत्य, सच्चा (2)
28. बाबा अपने बच्चों को अंत तक...रोटी तो खिलायेगा ही (2)
29. रिश्वतखोर, घूस लेने वाला व्यक्ति (2)
30. मदिरा, मद्य (3)
31. श्रीमान, उर्दू सम्मान सूचक शब्द (3)